ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
साप्ताहिक
आर्य सन्देश
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

मेधामयासिषम्।

सामवेद 171

मैं धारणावती बुद्धि को प्राप्त करूँ।

May I attain superior intellect.

वर्ष 41, अंक 26 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 16 अप्रैल, 2018 से रविवार 22 अप्रैल, 2018
विक्रमी सम्वत् 2075 सृष्टि सम्वत् 1960853119
दयानन्दाब्द : 195 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 8
फैक्स : 23365959 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें– www.thearyasamaj.org/aryasandesh

दलित सन्त और श्री राम

– डॉ. विवेक आर्य

...आज के कुछ अम्बेडकरवादी दलित साहित्य के नाम पर ऐसा कूड़ा परोस रहे हैं जिसका उद्देश्य केवल हिन्दू समाज की सभी मान्यताओं जैसे वेद, गौ माता, तीर्थ, श्री राम, श्री कृष्ण आदि को गाली देना भर होता है। इस सुनियोजित षड़यंत्र का उद्देश्य समाज सुधार नहीं अपितु परस्पर वैमनस्य फैला कर आपसी मतभेद को बढ़ावा देना है। हम सभी देशवासियों का जिन्होंने भारत की पवित्र मिट्टी में जन्म लिया है, यह कर्त्तव्य बनता है कि इस जातिवाद रूपी बीमारी को जड़ से मिटाकर इस हिन्दू समाज की एकता को तोड़ने का सुनियोजित षड़यंत्र विफल कर दें।.....

डॉ. अम्बेडकर जी के नाम के मध्य रामजी (जो उनके पिता का नाम था) जोड़े जाने पर कुछ तथाकथित अम्बेडकरवादी हो हल्ला कर रहे हैं। उनके हो हल्ले का मुख्य उद्देश्य केवल सत्य को स्वीकार न करने की उनकी पुरानी आदत है। सत्य सूर्य के समान है जो कुछ काल के लिए बादलों में छिप तो सकता है मगर बादल हटने पर दोबारा से प्रकाशित होने से कोई भी नहीं रोक सकता, में इसी सिद्धांत का प्रतिपादन किया जायेगा। भारतभूमि में उत्पन्न हुए समाज सुधारकों में से तीन महात्माओं का नाम दलित समाज में बड़ी श्रद्धा से लिया जाता है। वाल्मीकि, कबीर और रविदास। ध्यान देने योग्य बात यह है कि इन तीनों के चिंतन में श्री राम इस प्रकार से व्याप्त हैं जैसे जल के दो गिलासों को मिला दो तो उन्हें कोई भी अलग नहीं कर सकता।

महर्षि वाल्मीकि और श्री राम : महर्षि वाल्मीकि त्रेता युग में हुए थे। आप रामायण महाकाव्यम के रचियता, श्री राम और अन्य दसरथ पुत्रों के गुरु, प्राचीन वेद विद्या के पारंगत विद्वान थे। आपके विषय में यह भ्रान्ति उड़ा दी गई कि आप चोर अथवा डाकू थे जबकि ऐसा कुछ नहीं था। आपके बारे में दूसरी भ्रान्ति यह उड़ा दी गई कि आप इतने अज्ञानी थे कि आप राम-राम शब्द का उच्चारण तक न सीख सके तो आपको मरा-मरा का उच्चारण सिखाया गया ताकि आप मरा-मरा करते-करते राम-राम कहना सीख जायें। यह भी भ्रांति है। ध्यान देने योग्य बात यह है कि उस काल में अयोध्या के प्रतापी राजा दशरथ के चारों पुत्रों को शिक्षा देने का सौभाग्य उस काल के सबसे विद्वान गुरु को मिलना चाहिए। यह श्रेय ऋषि वाल्मीकि को मिलना यही सिद्ध करता है कि न वे डाकू थे, न ही अज्ञानी थे। अपितु महान विद्वान थे। ऋषि वाल्मीकि ने उन्हीं के शिष्य श्री राम के महान और अनुकरणीय जीवन को लेखबद्ध कर रामायण महाकाव्यम का लेखन किया। उस काल के सबसे बड़े विद्वानों में से एक ऋषि वाल्मीकि द्वारा उस काल के धरती पर सबसे मर्यादित, पुरुषोत्तम, वैदिक धर्मी श्री राम का चरित लिखना यही सिद्ध करता हैं कि ऋषि वाल्मीकि श्री राम के जीवन से कितने प्रभावित थे। यही काव्य कालांतर में वाल्मीकि रामायण के नाम से प्रसिद्द हुआ और लाखों वर्षो से भारतीय ही नहीं वैश्विक जनमानस का मार्गदर्शन करता आया हैं। ऋषि वाल्मीकि की इतनी प्रतिष्ठा थी कि उनके नाम से कालांतर में एक बड़ा वर्ग अपना उपनाम वाल्मीकि लिखने लगा। यह परम्परा कब, कैसे आरम्भ हुई। यह इतिहास अन्वेषण का विषय है। मगर इस परम्परा का स्पष्ट उद्देश्य श्री राम के गुरु वाल्मीकि को मान-सम्मान देना है। मुगल काल में जिस समाज ने ऋषि वाल्मीकि को सबसे अधिक मान दिया उसे इस्लामिक शासकों ने दो ही विकल्प दिए। पहला इस्लाम स्वीकार करने का और दूसरा अछूत या बहिष्कृत कहलाने का। इस समाज ने इस्लाम स्वीकार करने के स्थान पर मैला ढ़ोना स्वीकार किया। जजिया के स्थान पर अपमान स्वीकार किया। मगर अपने पूर्वजों का धर्म नहीं छोड़ा। यही कारण है कि आज भी वाल्मीकि समाज और हिन्दू राजपूतों के गोत्र एक ही मिलते हैं। ऐसे समाज ने श्री राम के गुरु वाल्मीकि को अपना आदर्श बनाया। उससे आप जैसे वाल्मीकि को अलग नहीं कर सकते वैसे ही श्री राम को भी अलग नहीं कर सकते। **अब चाहे कोई कितना भी हो हल्ला करे। सत्य यही है।**

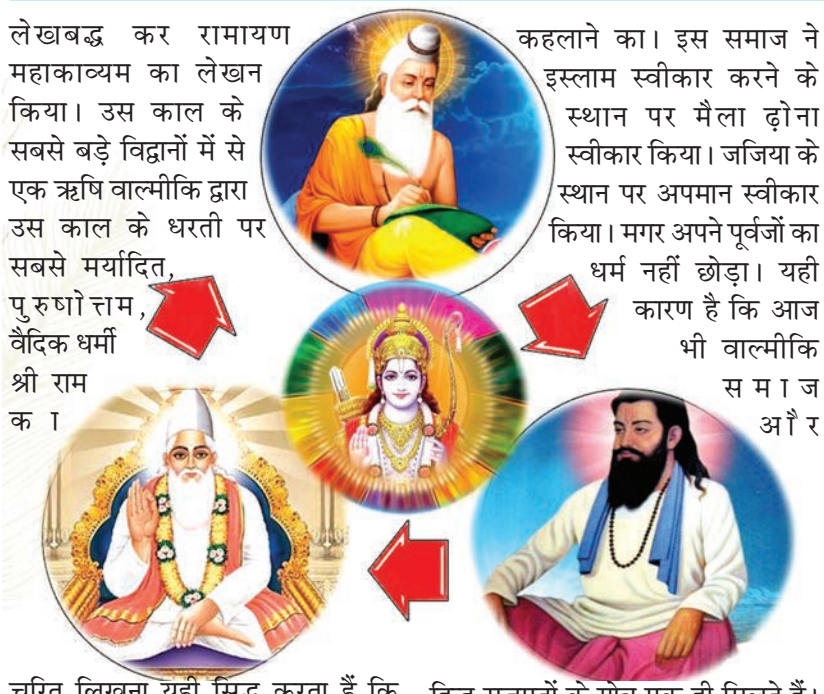

संत कबीर और श्री राम : कबीर दास का नाम दलित समाज में बड़े सम्मान से लिया जाता है। कबीर ने धर्म में प्रचलित कुप्रथाओं पर प्रहार किया लेकिन राम और हरि पर अटूट आस्था भी बनाये रखी। उनकी चंद साखियां नीचे दी जा रही हैं, जो साबित करती हैं कि वे श्री राम के कितने बड़े भक्त थे।

कबीर कूता राम का, मुतिया मेरा नाऊं।
गले राम की जेवड़ी, जित खैवें तित जाऊं।।

अर्थ : कबीर दास कहते हैं कि मैं तो राम का ही कुत्ता हूं और नाम मेरा मुतिया(मोती) है। गले में राम नाम की जंजीर पड़ी हुई है। मैं उधर ही चला जाता हूं जिधर मेरा राम मुझे ले जाता है।

मेरे संगी दोई जण, एक वैष्णों एक राम।
वो है दाता मुकति का, वो सुमिरावै नाम।।

अर्थ : कबीर साहब कहते हैं कि मेरे तो दो ही संगी साथी हैं- एक वैष्णव और दूसरा राम। राम जहां मुक्तिदाता हैं वहीं वैष्णव नाम स्मरण कराता है। यहां भी डॉ. अंबेडकर और संत कबीर विपरीत ध्रुवों पर खड़े साबित होते हैं।

क्यूं नृप-नारी नींदिये, क्यूं पनिहारिन कौ मान।
मांग संवारै पील कौ, या नित उठि सुमिरै राम।।

अर्थ : कबीर साहब कहते हैं कि रानी को यह नीचा स्थान क्यूं दिया गया और पनिहारिन को इतना ऊंचा स्थान क्यूं दिया गया? इसलिये कि रानी तो अपने राजा को रिझाने के लिये मांग संवारती है, श्रृंगार करती है लेकिन वह पनिहारिन नित्य उठकर अपने राम का सुमिरन करती है।

दुखिया भूखा दुख कौं, सुखिया सुख कौं झूरि।
सदा अजंदी राम के, जिनि सुखदुख गेल्हे दूरि।।

अर्थ : कबीर कहते हैं कि दुखिया भी मर रहा है और सुखिया भी-एक बहुत अधिक दु:ख के कारण और दूसरा अधिक सुख के कारण। लेकिन रामजन सदा ही आनंद में रहते हैं क्योंकि उन्होंने सुख और दु:ख दोनों को दूर कर दिया है।

मैं जाण्यूं पढ़िबो भलो, पढ़िबो से भलो जोग।
राम नाम सूं प्रीति करी, भल भल नीयौ लोग।।

अर्थ: कबीर साहब कहते हैं- पहले मैं समझता था कि पोथियों का पढ़ा बड़ा

– शेष पृष्ठ 7 पर

28वां आर्य महासम्मेलन अटलांटा (अमेरिका) : 19 से 22 जुलाई 2018

आर्य प्रतिनिधि सभा अमेरिका और ग्रेटर अटलांटा वैदिक मंदिर, अटलांटा अमेरिका की ओर से हम आपको और आपके परिवार को 28 वें आर्य महासम्मेलन में भाग लेने के लिए निमंत्रित करते हुए प्रसन्नता का अनुभव कर रहे हैं। सम्मेलन जुलाई 19 - 22, 2018 को, अटलांटा, अमेरिका में होगा। सम्मेलन का विषय है आधुनिक युग में वैदिक मूल्य और उनकी साधना।

उत्तर अमेरिका, भारत, नेपाल, ऑस्ट्रेलिया, यूरोप और दुनिया के अन्य हिस्सों से आर्य समाज और वैदिक संगठनों के अनेक प्रतिनिधि सम्मेलन में भाग लेंगे।

इस कार्यक्रम में योग एवं ध्यान सत्र, रोचक युवा सत्र, सांस्कृतिक कार्यक्रम, आर्य समाज से संबंधित सम-सामयिक विषयों पर चर्चा, सामाजिक कल्याण सम्बंधित चर्चाओं और वयस्कों तथा युवाओं के लिए गतिविधियों को शामिल किया जाएगा जिससे कि हम सभी अपने भौतिक, नैतिक/आध्यात्मिक और सामाजिक उत्थान के लक्ष्यों की ओर बढ़ते हुए संसार का उपकार करते चलें।

हमारा आग्रह है कि आप सम्मेलन में भाग लेने का कार्यक्रम अवश्य बनाएं और अपने मित्रगणों, आर्य समाजों और अन्य संस्थाओं को भी सूचित करें। युवाओं के लिए विशेष छूट उपलब्ध है।

सम्मेलन के विषय में अधिक जानकारी के लिए हमारी वेबसाइट www.aryasamaj.com/ams, पर जाएँ। पंजीकरण ऑनलाइन है और अनिवार्य है। लगातार अपडेट के लिए फेसबुक पेज facebook.com/vedicamerica को लाइक कर सकते हैं। – डॉ. दीनबंधु चन्दोरा, संयोजक
डॉ. कुलभूषण गुलाटी, संयोजक

वेद-स्वाध्याय

शुभ एवं बलवान संकल्प

आकूतिं देवीं सुभगां पुरो दधे चित्तस्य माता सुहवा नो अस्तु।
यामाशामेमि केवली सा मे अस्तु विदेयमेनां मनसि प्रविष्टाम्।। -अथर्व. 19/4/2
ऋषिः अथर्वाङ्गिराः।। देवता - अग्निः।। छन्दः जगती।।

शब्दार्थ - **सुभगाम्** = उत्तम ऐश्वर्य - विषयक **आकूतिं देवीम्** = अभिप्राय देवता को **पुरोदधे** = मैं सामने रखता हूं, वह **चित्तस्य माता** = चित्तभाग की माता, निर्मात्री, बनाने वाली, **आकूति नः सुहवा अस्तु** = मेरे लिए सुगमता से बुलाने योग्य होवे। **यां आशां एमि** = मैं जिस आशा को करूं, जिस दिशा में जाऊं **सा मे केवली अस्तु** = वही केवल शुद्ध रूप में मेरे सामने हो। **मनसि प्रविष्टाम्** = अन्तःकरण में घुसी हुई **एनाम्** = इस अभिप्राय देवता को **विदेयम्** = मैं सदा जान सकूं, पा सकूं।

विनय- बहुत बार मुझे स्वयं ज्ञात नहीं होता कि मेरा अभिप्राय क्या है? मैं अपने आन्तरिक अभिप्राय को स्पष्ट सामने लाने में समर्थ नहीं होता। असत्य भाषण, असत्य चिन्तन करते, नाना भयों या रागों के वशीभूत होते हुए मेरा मानसिक व्यापार इतना कलुषित और कृत्रिम हो गया है कि मैं उसकी गड़बड़ में अपने वास्तविक अभिप्राय को ही खो देता हूं। अपने सच्चे आशय को दूसरों से छिपाते-छिपाते, वह मुझसे भी छिप जाता है, परन्तु मैं अब इस आत्म-वञ्चना की अवस्था को त्यागता हूं और आज से सदा अपनी आकूति (अभिप्राय) को स्पष्ट सामने लाकर रक्खूंगा। मन की इच्छाएं, अभिलाषाएं जब बुरी होती हैं, दुर्भगा तथा आसुरी होती हैं, तभी हम प्रायः इन्हें छिपाते हैं। जब ये सुभगा और देवी होती हैं, जब उत्तम ऐश्वर्यों की इच्छा या सबके भले की कल्याणी इच्छा होती है तब भी यदि हम इन्हें छिपाते हैं तो केवल निर्बलता के कारण या किन्हीं झूठे भय व लज्जा के कारण ही ऐसा करते हैं, अतः जब मेरी आकूति सुभगा और देवी है तो मैं क्यों डरूं? क्यों छिपूं? मैं तो अब इसे सामने स्पष्ट रखता हूं। मैं आज से अपने जीवन को इतना सच्चा बनाता हूं, अपने मानसिक क्षेत्र को सत्यज्ञान के प्रकाश से ऐसा प्रकाशित रखता हूं कि अब मैं मन में घुसी हुई अपनी इस अभिप्राय देवता को हे प्रभो! जब चाहूं तब तुरन्त जान सकूं, पा सकूं, निकाल सकूं। मन (अन्तःकरण) का जो निचला 'चित्त' नामक भाग है जहां कि विचार, अभिप्राय सुप्त रूप में पड़े रहते हैं या यूं कहना चाहिए कि जो चित्त इनका बना हुआ है (जिस चित्त की माता अभिप्राय है) उस स्थान से जब मैं चाहूं तभी अपने अभिप्राय को पुकारकर ला सकूं। आकूति मेरे लिए सदा सुहवा हो, सुगमता से पुकारने योग्य हो। जब आवश्यकता हो तब मैं उसे पुकारकर वैखरी वाणी के रूप में लाकर खड़ा कर सकूं। हे प्रभो! अब मेरे मनोराज्य की सब अव्यवस्था, गड़बड़ दूर कर दो। मैं जब जिस आशा व इच्छा को लेकर चलूं, जिस दिशा में चलूं, तब वही अकेली आशा (इच्छा) मेरे सामने रहे, शुद्ध-रूप में वही प्रकाशमान रहे; और सब गौण विचार (इच्छाएं) गड़बड़ न मचाते हुए यथास्थान पीछे रहें। यदि ऐसी व्यवस्था स्थापित हो जाएगी तो मेरी सब आकूतियां (अभिप्राय) सङ्कल्पशक्ति बन जाएंगी और वे पूर्ण व सफल हुआ करेंगी।

-: साभार :- वैदिक विनय

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

सम्पादकीय

मूर्ति और भगवान अपना बचाव खुद ही करें

....आर्य समाज मूर्ति पूजा के पक्ष में नहीं रहा लेकिन मूर्तियों को इस तरह से नुकसान पहुंचाना बहुत ही गंभीर बात है क्योंकि ये सिर्फ चुनाव की राजनीति नहीं है, यह समाज और सभ्यता के नाम पर एक जंग की तैयारी हो रही है। मूर्तियों को तोड़ना या भीड़ के जरिए किसी को मारना आम जनता के बीच इस तरह की घटनाएं बढ़ती जा रही हैं। मुझे नहीं लगता कि यह सिलसिला जल्दी थमने वाला है।.....

भारत देश धीरे-धीरे धार्मिक राजनीति की तोड़फोड़ की एक ऐसी प्रयोगशाला बनता जा रहा है जिसके छींटे हर एक राजनैतिक दल की आस्तीन पर लगे हैं। त्रिपुरा से शुरू हुई लेनिन की मूर्ति तोड़ने की राजनीति अब तेजी से देश के बाकी हिस्सों में भी फैल रही है। हाल ही में बिहार के नवादा शहर के गोंदापुर इलाके में बजरंगबली की एक मूर्ति टूटने की खबर आई। अचानक ही लोगों की भीड़ बजरंगबली के चबूतरे के पास जमा हो गई और देखते ही देखते हिंसक हो गई। इधर मूर्ति तोड़े जाने के कारण पत्थरबाजी जारी ही थी कि थोड़ी देर बाद लोगों ने शहर की ही हजरत सैय्यद सोफी दुल्ला शहीद शाह की मजार में आग लगा दी। मजार के लोगों का कहना है कि पास के हिन्दुओं ने ही मजार को जलने से बचा लिया। हालाँकि गोंदापुर के उस चबूतरे पर प्रशासन ने नई मूर्ति लगवा दी है। स्थानीय लोगों का कहना है गोंदापुर के लोगों के लिए भी यह कोई श्रद्धा और आस्था का लोकप्रिय केंद्र नहीं था, लेकिन मूर्ति तोड़े जाने के बाद से यह जगह काफी चर्चित हो गई है।

इससे दो दिन पहले उत्तर प्रदेश के इलाहाबाद में झूंसी के त्रिवेणीपुरम में डॉ. भीमराव अंबेडकर की मूर्ति को निशाना बनाया गया था। आजमगढ़ में, तमिलनाडु के चेन्नई में बी आर अंबेडकर की मूर्ति तोड़ी गई थी। उसमें उनकी गर्दन को धड़ से अलग कर दिया गया था। कर्नाटक में पेरियार की मूर्ति और कोलकाता में महात्मा गांधी की मूर्ति को नुकसान पहुंचाया गया था। ज्ञात हो त्रिपुरा की घटना के अगले दिन कोलकाता में श्यामा प्रसाद मुखर्जी की मूर्ति तोड़ कर उसके मुंह पर कालिख पोत दी गई थी।

ये सब कुछ ठीक उसी तरह प्रतीत हो रहा है जिस तरह पाकिस्तान समेत अन्य मध्य एशियाई देशों में मस्जिदों को लेकर संघर्ष होता चला आ रहा है कि मस्जिदों पर किसका वर्चस्व हो! इस संघर्ष ने अभी तक कई देशों को बर्बादी की कगार पर पहुँचाया है। लगता है अब भारत में ज्यादा मूर्ति किसकी हों इस संघर्ष ने जन्म ले लिया। घटनाओं को अंजाम देने वाले लोगों को देश के इतिहास की बहुत कम जानकारी है और आज हम यह सब इसी का नतीजा देख रहे हैं।

देश के स्वतन्त्रता संग्राम में शामिल भारत माता के सच्चे सपूतों और महापुरुषों की मूर्ति स्थापित करने की परम्परा रही है। स्वतन्त्रता के बाद क्रांतिकारियों और महापुरुषों की प्रतिमाओं की स्थापना की जाती रही है ताकि देश के शासक और प्रजा इन वीरों के बलिदान को जेहन में जिन्दा रख सकें। दूसरा हमारे देश में मूर्तियों के सहारे राजनीति करने की परम्परा कभी नहीं रही है लेकिन बदलते राजनैतिक दौर में कुछ दलों ने मूर्ति आधारित राजनीति शुरू कर दी है। उत्तर प्रदेश में बसपा कार्यकाल में जितनी मूर्तियां स्थापित की गई उतनी शायद आजादी के बाद से नहीं की गयी होगी। एक किस्म से कहें तो क्रांतिकारियों और महापुरुषों के बलिदान और कार्यों को आज देश के राजनितिक दलों द्वारा बन्दरबाँट किया जा रहा है।

लेनिन हमारे कोई महापुरुष या आजादी के दीवाने सैनिक नहीं हैं। वह वामदलों के राजनैतिक आस्था के प्रतीक हो सकते हैं। भारत देश में उनकी प्रतिमा स्थापित करने का कोई औचित्य भी नहीं है क्योंकि वह भारतमाता के धराधाम से जुड़े हुए नहीं हैं। इसके बावजूद लोकतांत्रिक व्यवस्था में इस तरह तोड़फोड़ मनमानी करने का अधिकार किसी को भी नहीं है इसलिए जिसने भी मूर्तियों को तोड़कर आपसी समरसता पर हमला और हिंसा फैलाने की कोशिश की है उन्हें कड़ी सजा मिलनी चाहिए।

इतिहास इसका गवाह है कि आर्य समाज मूर्ति पूजा के पक्ष में नहीं रहा लेकिन मूर्तियों को इस तरह से नुकसान पहुंचाना बहुत ही गंभीर बात है क्योंकि ये सिर्फ चुनाव की राजनीति नहीं है, यह समाज और सभ्यता के नाम पर एक जंग की तैयारी हो रही है। मूर्तियों को तोड़ना या भीड़ के जरिए किसी को मारना, आम जनता के बीच इस तरह की घटनाएं बढ़ती जा रही हैं। मुझे नहीं लगता कि यह सिलसिला जल्दी थमने वाला है क्योंकि वर्तमान में इन घटनाओं पर अंकुश लगाने के लिए कोई नजर नहीं आ रहा है। माननीय प्रधानमंत्री जी की निंदा अपनी जगह ठीक है लेकिन भड़काऊ बयान देने वालों पर कार्रवाई भी होनी चाहिए। सवाल ये भी है कि क्या देश में राजनीतिक विरोध अब दुश्मनी में तब्दील होता जा रहा है? मूर्तियां गिराना क्या इसी उग्र राजनीतिक मानसिकता का नमूना है! हमारी पूरी राजनीति इसी तरफ जा रही है लोकतंत्र में जब तक ऐसी घटनाओं पर राजनीति रहेगी तब तक इन सभी घटनाओं को रोक पाना बहुत मुश्किल है।

इतना हिंसा भरा वातावरण तैयार कर दिया है कि लोगों को लग रहा है कि हम मूर्तियां तोड़ सकते हैं, दूसरों का कत्ल कर सकते हैं, किसी को जला सकते हैं, उसका वीडियो इंटरनेट पर डाल सकते हैं, अपना मुंह बिना छिपाए गर्व से कह सकते हैं कि हम लोगों की जान ले रहे हैं। मुझे लगता है अभी तो यह सिर्फ शुरुआत है कुछ दिनों में मंदिर-मस्जिद का मुद्दा भी रफ्तार पकड़ेगा। 2019 में चुनाव आने वाले हैं इसलिए मुझे लगता है कि यह सब चीजें अब बस बढ़ती ही जाएंगी। ऐसे में मूर्तियाँ और भगवान अपना बचाव खुद ही करें तो ठीक है। *- सम्पादक*

ओ३म्
भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण
(द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)
सत्य के प्रचारार्थ
सत्यार्थ प्रकाश
सत्य के प्रचारार्थ

● प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
● विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
● स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन
कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति **सत्यार्थ प्रकाश** के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें
आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650622778
E-mail : aspt.india@gmail.com

जाति सम्प्रदाय से बढ़ रहे क्लेश

- प्रकाश आर्य

बंट रही संस्कृति, बंट रहा देश,
जाति सम्प्रदाय से बढ़ रहे क्लेश।
मानव हो मानवता के बनो पुजारी,
है वसुदेव कुटुम्बकम की संस्कृति हमारी।।
मानवता को नष्ट करता, जातिवाद
जाति, सम्प्रदायों में बांटकर,
कर रहे मानवता का अपमान।
उसके बेटे-बेटियों पर ये जुल्म,
करेगा क्षमा नहीं भगवान।।

परमात्मा ने इस संसार का व प्राणियों की आवश्यकता की चल-अचल वस्तुओं का निर्माण किया। उसने सूर्य, चन्द्रमा, मेघ से गिरता पानी, नदी, तालाब, समुद्र, यह पृथ्वी, वृक्ष, औषधि पशु आदि समस्त प्राणि मात्र के लिए दिए। उसने मनुष्य-मनुष्य में कोई भेद नहीं किया क्योंकि हम सब परमात्मा के ही पुत्र-पुत्री हैं, हममें कोई भेद नहीं। ये जाति भेद अज्ञानतावश मनुष्यों की देन है। परमात्मा ने किसी को ऊँचा-नींचा, अछूत या दलित नहीं बनाया, यह सब तो मनुष्य की सोच के कारण है। जब मनुष्य की बुद्धि में यह अज्ञानता का विचार नहीं आया था तब तक संसार में मनुष्य मात्र की एक ही जाति थी।

दुनिया का इकरंगी आलम आम था।
पहले एक कौम थी, इंसान जिसका नाम था।

यह जातिवाद हमारी सनातन संस्कृति के अनुसार नहीं है। जिस प्रकार आज अनेक ऐसी कई मान्यतायें प्रचलन में आ गई हैं, जिनका कोई ठोस आधार ही नहीं है। किन्तु उन्हें मानने वालों की संख्या अच्छी खासी हो गई है, इसलिए उसे अब सामाजिक मान्यता के रूप में माना जा रहा है। ऐसे ही वर्ण व्यवस्था के स्थान पर जाति व्यवस्था का प्रचलन हो गया। क्यों हुआ, कब से हुआ, यह कहीं स्पष्ट नहीं है।

समाज में पहले वर्ण व्यवस्था थी जिसमें मनुष्य की पहचान गुण, कर्म, स्वभाव के आधार पर थी, उचित थी। मनुष्य को अपनी योग्यता के अनुसार वर्णों में ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य या शूद्र स्थान प्राप्त होता था। आज न समाजवाद है, न राष्ट्रवाद है, न मानवीय दृष्टिकोण, इन सब पर भारी जातिवाद है। परिणाम हुआ खरबूजे को देख खरबूजा रंग बदलता है की कहावत चरितार्थ हो रही है। जब जातिवाद को शस्त्र बनाकर ही सब कुछ पाया जा सकता है तो दूसरा वर्ग जो अभी तक जातिवाद को महत्व नहीं देता रहा वह भी इसी ओर प्रेरित होकर जातिवाद को बढ़ावा दे रहा है।

जन्म के अनुसार जाति व्यवस्था में मनुष्य को बांटना समस्त समाज के लिए एक नासूर है। ऐसा नासूर जिसकी आग में समाज, संगठन संस्कृति, राष्ट्र सभी बुरी तरह झुलस रहे हैं।

जातिवाद और साम्प्रदायिक विचार धारा के कारण यह देश वर्षों तक गुलाम रहा। सनातन धर्म की जातियों में बटी शक्ति ने विदेशी ताकतों को अवसर प्रदान किया। जातिवाद के पाप के कारण हमने ही भाईयों को तिरस्कृत कर उन्हें सनातन धर्म से पृथक होने हेतु विवश किया। जातिवाद के विष का ही प्रभाव था, डॉ. भीमराव अम्बेडकर जैसे महान व्यक्तित्व को बौद्ध सम्प्रदाय स्वीकार करना पड़ा। हृदय विदारक घटनाओं से पूर्ण मोपला कांड जिससे सनातन संस्कृति को भारी क्षति हुई, उपेक्षा के कारण सनातन धर्मियों ने दूसरे सम्प्रदाय को अपना लिया। जातिवाद का ही दुष्परिणाम काश्मीर, केरल, पूर्वांचल के कई राज्य हैं, जहाँ सनातन धर्मी अपने ही देश में अनेक प्रकार के संकट हिंसा और अपमान से भरी जिन्दगी जी रहे हैं। जाति व सम्प्रदाय का ही परिणाम पाकिस्तान, बंगला देश व कश्मीर का ताण्डव है। इस जातिवाद, छुआछूत की मानसिकता ने ही अपनी शक्ति, संगठन देश को कमजोर कर दिया। जन्म से मनुष्य की जाति मानने का कहीं शास्त्रोक्त कोई प्रमाण नहीं है।

योगीराज श्रीकृष्ण ने चार वर्णों को गुण कर्म के अनुसार माना, कहा -
चातुर्वरण्यं मयाश्रृष्ट गुण कर्म विभाग स:

संसार के श्रेष्ठतम विद्वान आचार्य मनु ने जन्म से जाति को नहीं माना है। कर्म के अनुसार वर्ण व्यवस्था का सिद्धान्त माना गया है। **जन्मना जायते शूद्रः संस्काराद् द्विज उच्चयते।** जन्म से सभी शूद्र हैं, ज्ञानमय संस्कारों से ब्राह्मण बनते हैं। जन्म से सभी शूद्र अर्थात् अज्ञानी ही होते हैं। क्योंकि बालपन में किसी को कोई ज्ञान नहीं होता इसलिए सभी को शूद्र कहा जाता है, परमात्मा ने हमें यह स्वतन्त्रता दी है कि हम अपने जीवन को ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य या शूद्र जो बनाना चाहे स्वयं बना सकते हैं। जन्म से कोई ब्राह्मण, क्षत्रिय या वैश्य पैदा नहीं होता। शूद्र को किसी जाति से जोड़ना मूर्खता है।

प्राचीन समय में वर्ण व्यवस्था ही व्यवहार में थी। इसकी पुष्टि तुलसीदास जी की इन पंक्तियों से भी होती हैं-

वरणाश्रम निज-निज धरम निरत वेद पथ लोग।
चलहिं सदा पावहिं सुखई नहिं भय सोक न रोग।।

जाति शब्द का उपयोग प्राणियों की एक प्रकार की श्रेणी के लिए किया जाता है, पहले यही किया जाता था। जैसे पंखों से उड़ने वाले समस्त पक्षियों की जाति पक्षी जाति, जल में रहने वाले समस्त जीवों की जलचर जाति, चौपाए प्राणियों की पशु जाति और मनुष्य के रूप में जन्मे सभी की मानव जाति एक ही कहलायेगी ''मानव जाति''।

हमारी सनातन संस्कृति मनुष्य बनने का सन्देश देती है। ''मनुर्भव जन्या दैव्यम: जनम'' पहले स्वयं मनुष्य बनो और दूसरों को भी मनुष्य बनाओ। किसी जाति का सदस्य बनने को नहीं कहा।

हम जिन भगवान राम को मानते हैं, उन्होंने सबको गले लगाया। जिनके रातदिन गीतों में गाते हैं ''रघुपति राघव राजाराम, पतित पावन सीताराम'' पर उसे अपने जीवन में आत्मसात नहीं करते।

- मन्त्री, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली
मो.- 9826655117

बोध कथा **मोह ममता के रिश्ते हैं सब, कोई नहीं यहां अपना रे!**

गतांक से आगे -

मां ने कहा-मैं मर तो जाऊं। मेरा एक ही पुत्र है, इसके लिए नहीं मरूंगी तो किसके लिए मरूंगी? परन्तु पहले मेरी जन्म-पत्री मंगवाकर देख लो। यदि मेरे भाग्य में और सन्तान उत्पन्न होना लिखा है तो फिर मैं काहे को मरूं!''

महात्मा ने युवक के पिता की ओर देखकर कहा-''लाला जी! यह मां तो नहीं पीती, आप ही इस विष को पी लीजिये। आप जो इतना रोते-पीटते हैं, अपने बेटे से भी आपको प्यार है, इसके वियोग में दु:खी हुए जाते हैं, तो लो, पीयो यह विष! तुम्हारा पुत्र अभी जीवित हो जायेगा।''

लाला जी बोले-''पी तो लूं परन्तु मेरा व्यापार बहुत फैल गया है। इसे संभालने वाला कोई नहीं है, इसीलिये विष नहीं पी सकता।''

महात्मा जी युवक की पत्नी को सम्बोधित करके बोले-'अच्छा देवी! ये दोनों नहीं पीते, तू ही यह विष पी ले।'

पत्नी ने हाथ जोड़कर कहा-''मैं पीने को तैयार हूं महाराज! परन्तु मेरी कोख में तो मरनेवाले का चिन्ह है। मेरे साथ यदि आप उसे भी मारना चाहते हैं तो लाइये, मैं विषपान कर लेती हूं, परन्तु इसका निर्णय आप ही कीजिये कि मुझे ऐसा करना चाहिये या नहीं।''

महात्मा बोले-''नहीं, तुझे ऐसा नहीं करना चाहिये। परन्तु जब कोई भी इस विष को पीने के लिए तैयार नहीं, तो फिर यह जियेगा कैसे? अच्छा, दूध तो लाओ। मैं सोचता हूं कौन पीयेगा।''

जब वे इस प्रकार बातें कर रहे थे तो मुहल्लेवाले एक-एक करके खिसक रहे थे। प्रत्येक व्यक्ति डर रहा था कि मेरी बारी न आ जाय।

दूध आया। महात्मा ने मिश्री की पुड़िया उसमें घोल दी। लोगों की ओर देखा। कितने ही लोग उठकर चले गये। भीड़ बहुत छंट गई। महात्मा बोले-''जब कोई नहीं पीता तो शायद मुझे ही यह पीना पड़ेगा।''

एक-साथ कितने ही लोगों ने कहा-''हां-हां, महाराज! आप पी लो, आप ही पी लो।''

युवक की मां ने कहा-''आप तो महात्मा हैं, साधु हैं। आप ही पियो।''

युवक के पिता ने कहा-''साधु-सन्तों का तो जीवन ही दूसरों के लिए होता है महात्मा जी! आप ही कृपा करो।''

अर्थात्, आप ही मरो, हमें मरने का अवकाश नहीं। साधु के कहने पर किसी ने विष नहीं पिया तो महात्मा ने स्वयं ही विष पी लिया। उसमें विष तो था ही नहीं। थी केवल मिश्री। *- क्रमशः*

- महात्मा आनन्द स्वामी सरस्वती
साभार : बोध कथाएं

बोध कथाएँ: वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश प्रेषित करें या मो. नं. 9540040339 पर सम्पर्क करें।

फिजियोथैरेपिस्ट चाहिए

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा संचालित दीवानन्द स्मारक गोकुलचन्द आर्य धर्मार्थ अस्पताल, औचन्दी दिल्ली-110039 को एक अनुभवी बी. पी.टी. फिजियोथैरेपिस्ट की आवश्यकता है। वेतन योग्यतानुसार। अनुभव न्यूनतम 3 वर्ष। इच्छुक महानुभाव सम्पर्क करें-
श्री महेन्द्र सिंह लोहचब, मन्त्री,
मो. 9999148483

20वां आर्य परिवार वैवाहिक परिचय सम्मेलन

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के निर्देशन में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्त्वावधान में 20वां परिचय सम्मेलन का आयोजन 6 मई, 2018 को आर्यसमाज कीर्ति नगर, नई दिल्ली में प्रात: 10 बजे से किया जाएगा।

समस्त आर्य परिवारों से अनुरोध है कि अपने विवाह योग्य पुत्र-पुत्रियों के आर्य परिवारों से सम्बन्ध जोड़ने के लिए परिचय सम्मेलन में शीघ्रातिशीघ्र पंजीकरण कराने का कष्ट करें। पंजीकरण फार्म पूर्ण विवरण के साथ **'दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा'** के नाम **300/- रुपये** का डिमाण्ड ड्राफ्ट संलग्न भेजें अथवा 'दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा' के नाम **खाता संख्या 910010001816166 IFSC - UTIB0000223 एक्सिज बैंक करोल बाग शाखा** में जमा कराकर रसीद फार्म के साथ भेंजे। आवेदन भेजने की **अन्तिम तिथि 26 अप्रैल, 2018** है। इसके बाद प्राप्त आवेदनों को विवरणिका में प्रकाशित नहीं किया जा सकेगा। पंजीकरण फॉर्म **www.thearyasamaj.org** से डाउनलोड किया जा सकता है। आप अपना/अपने बच्चों का पंजीकरण **www.matrimony. thearyasamaj.org** पर ऑनलाईन भी कर सकते हैं। अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें-

अर्जुनदेव चड्ढा, राष्ट्रीय संयोजक (मो. 9414187428)
एस. पी. सिंह, संयोजक, दिल्ली (मो. 9540040324)

मेरा देश सुलग रहा है.....!

..राजनेताओं को दलीय भावना से ऊपर उठकर राष्ट्रीय एकता और समरसता की भावना को प्राथमिकता देनी चाहिए थी, वहां हिंसा, आगजनी को प्राथमिकता दी गयी। वोट की राजनीति के लिए स्वार्थ की फूंक से हिंसा को रोज सुलगाया जा रहा है।....

पश्चिम बंगाल, राजस्थान और बिहार के कई हिस्सों में रामनवमी के दौरान हुई हिंसा की घटनाएँ थमी भी नहीं थी कि अनुसूचित जाति-जनजाति कानून में बदलाव के विरोध ा में आहूत ''भारत बंद'' हिंसक हो गया। करीब 12 लोगों की जान चली गई और बड़ी संख्या में लोग जख्मी हो गए। बंद समर्थकों ने यातायात पर भी अपना गुस्सा उतारा। कहीं ट्रेनें रोकी गई तो कहीं बसों को आग के हवाले कर दिया गया। पुलिस चौकी जलाने के साथ पुलिसकर्मियों को भी निशाना बनाया गया।

दलित आंदोलन की आग से पश्चिमी यूपी सबसे ज्यादा प्रभावित रहा। मेरठ, मुजफ्फरनगर, फिरोजाबाद, हापुड़, बिजनौर और बुलंदशहर सहित पश्चिमी यूपी के जिलों में जमकर तोड़फोड़ और हिंसा हुई। सबसे ज्यादा हालात मध्य प्रदेश, यूपी, हरियाणा, राजस्थान और पंजाब में खराब दिखे। भिंड-मुरैना और ग्वालियर जिले में भी छह लोगों की मौत हो गई। यहां पुलिस को कर्फ्यू लगाना पड़ गया। हालात पर काबू करने के लिए पुलिस को कई जगह लाठीचार्ज करना पड़ा और आंसू गैस के गोले दागने पड़े।

दरअसल अनुसूचित जाति-जनजाति कानून जोकि 11 सितम्बर 1989 में भारतीय संसद द्वारा पारित किया गया था, यह अधि ानियम उस प्रत्येक व्यक्ति पर लागू होता है जो अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति का सदस्य नहीं हैं तथा वह व्यक्ति इस वर्ग के सदस्यों का उत्पीड़न करता है। अब सुप्रीम कोर्ट द्वारा उसमें संशोधन की बात की गयी थी।

एकाएक मामला कुछ यूँ उभर कर आया जब दलित समुदाय से ताल्लुक रखने वाले एक शख्स ने महाराष्ट्र के सरकारी अधिकारी सुभाष काशीनाथ महाजन के खिलाफ शिकायत दर्ज कराई थी। शिकायत में महाजन पर शख्स ने अपने ऊपर कथित आपत्तिजनक टिप्पणी के मामले में अपने दो कर्मचारियों के खिलाफ कानूनी कार्रवाई पर रोक लगाने का आरोप लगाया था। काशीनाथ महाजन ने एफआईआर खारिज कराने के लिए हाई कोर्ट का रुख किया था, लेकिन बॉम्बे उच्च न्यायालय ने इससे इन्कार कर दिया था। इसके बाद महाजन ने हाई कोर्ट के फैसले को शीर्ष अदालत में चुनौती दी थी। इस पर शीर्ष अदालत ने उन पर एफआईआर हटाने का आदेश देते हुए अनुसूचित जाति-जनजाति एक्ट के तहत तत्काल गिरफ्तारी पर रोक का आदेश दिया था। यही नहीं सुप्रीम कोर्ट ने ऐसे मामलों में अग्रिम जमानत को भी मंजूरी दे दी थी।

कोर्ट के इस फैसले के बाद से ही देश के दलितों में काफी क्रोध पनपने लगा था, जिसने एक हिंसक रूप ले लिया है। हालाँकि मोदी सरकार ने दलितों के हक में सोमवार (2 अप्रैल) को कोर्ट के सामने इस फैसले को लेकर पुर्नविचार याचिका दायर कर दी थी। लेकिन इसके बाद भी मोदी योगी मुर्दाबाद भाजपा आर. एस.एस. मुर्दाबाद जैसे नारों के साथ हिंसा का दौर देर शाम तक चलता रहा।

कथित ऊंची जातियों द्वारा दलितों को किसी प्रकार के शोषण से बचाने के लिए देश में 1995 में एसटी.एससी एक्ट लागू हुआ। मगर हालिया रिपोर्ट के अनुसार हर साल देश भर में लाखों दलित उत्पीड़न से जुड़े केस सामने आते हैं जिनमें से सैकड़ों फर्जी होते हैं।

दलित संगठनों और कई राजनीतिक दलों के नेता केंद्र सरकार से इस मसले पर अपना रुख स्पष्ट करने की मांग करने के साथ ही हिंसा का मूक समर्थन भी करते दिखे। जहाँ राजनेताओं को दलीय भावना से ऊपर उठकर राष्ट्रीय एकता और समरसता की भावना को प्राथमिकता देनी चाहिए थी, वहां हिंसा, आगजनी को प्राथमिकता दी गयी। वोट की राजनीति के लिए स्वार्थ की फूंक से हिंसा को रोज सुलगाया जा रहा है।

शायद इसी कारण ही एक बार फिर कलमकारों ने असली सवाल दबा दिए क्योंकि जो चेहरे और तस्वीरें सामने आई हैं जो संशय पैदा करती हैं कि क्या दलित आंदोलन में हिंसा भड़काने में कोई और भी शामिल था? पुलिस ने जब गोलियां नहीं चलाई तो ये मौतें कैसे हुई? क्या आंदोलनकारी एक दूसरे को मार रहे थे? या कोई और आंदोलन को दूसरी तरफ ले जा रहा था। ये जरुर जांच का विषय है।

यद्यपि किसी भी कानून में सुप्रीम कोर्ट का यह पहला संशोधन नहीं है। हाल ही में सुप्रीम कोर्ट ने खाप पंचायतों द्वारा बने सामाजिक कानूनों को चुनौती दी थी। इससे पहले जुलाई 2017 को सुप्रीम कोर्ट ने पति और ससुरालियों के उत्पीड़न से महिलाओं को बचाने वाली भारतीय दंड संहिता की मशहूर धारा 498-ए पर अहम निर्देश जारी किए थे। जिसमें सबसे अहम निर्देश यह था कि पुलिस ऐसी किसी भी शिकायत पर तुरंत गिरफ्तारी नहीं करेगी। महिला की शिकायत सही है या नहीं, पहले इसकी पड़ताल होगी। ऐसा ही कुछ हाल महिलाओं की सुरक्षा के लिए बने कानून की धारा 354 के सेक्शन ए.बी. सी.डी और रेप के खिलाफ बनी कानून की धारा का भी दुरुपयोग बहुतेरे मामलों में झूठा पाया गया।

अब बीएसपी प्रमुख मायावती शीर्ष अदालत की ओर से किए गए बदलाव के बाद सरकार के रवैये की जमकर आलोचना कर रही हैं, लेकिन 2007 में जब वह उत्तर प्रदेश में सत्ता में थीं तो उस समय उन्होंने इस कानून के हो रहे दुरुपयोग पर राज्य के सभी पुलिस अधिकारियों को निर्देश दिए थे कि जाँच के बाद ही कारवाही हो ताकि किसी निर्दोष को सजा न मिले। किन्तु आज हिंसा को शब्दों और संवेदना की ओट में खड़ा कर जायज सा ठहराने की मांग सी हो रही है।

- राजीव चौधरी

आर्य सभा मॉरीशस का निर्वाचन सम्पन्न

श्री हरिदेव रामधनी पुनः प्रधान निर्वाचित

आर्य सभा मॉरीशस का निर्वाचन रविवार 25 मार्च, 2018 को सम्पन्न हुआ, जिसमें 'दीया दल' की 17-1 से जीत हुई। निर्वाचन निम्नलिखित महानुभाव चुने गए। **दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार की ओर से हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं।**

Representative of SAPS : Prof. JUGESSUR, Soodursun
Honorary Chairman : Dr. NEEWOOR Roodrasen
Arya Neta : GANGOO, Dr Oudaye Narain
President : **RAMDHONY, Harrydev**
Vice President : PEERTHUM, Satterdeo, GOWD, Ravindrasingh, SOOKUN TEELUCKDHARRY, Poornimah Devi
Secretary : **GANGOO Dharamveer**
Assistant Secretary : LALLBEEHARRY, Dr Jaychand, RAMCHURN, Vijaye Anand, MOHABEER, Dr Santee
Treasurer : **RAMJEE, Rajendra Prasad**
Assistant Treasurer : JEEWUTH, Bholanath, NUCKCHEDDY, Sanjit Kumar, BEEHAREE, Sharandas
Executive Member : BISSESSUR Bisnoodave, CHUMMUN, Vedendranand Sharma,SEWPAL, Ravindradeo, YALLAPPA, Yalini Devi, TANAKOOR, Balchan, RAMDONEE, Pradeep, BOOLAKY, Bagwandass, RAMCHURN, Danwantee, Dr. NABAB, Rajnish, RAMPHUL, Suttee, & Dr. RADHAKEESOON Comalchandra

अपने 'सहयोग' को बनाएं किसी की मुस्कान

सर्वविदित है कि आर्य समाज के कार्य देश-विदेश में संचालित हैं, कुछ कार्य नितान्त आदिवासी क्षेत्रों में संचालित हैं। उन क्षेत्रों में कार्य करते हुए देश में व्याप्त गरीबी को निकटता से देखने का अवसर मिला, महसूस हुआ कि अभी देश की तस्वीर बदलने में समय लगेगा परन्तु इसमें हम सब मिलकर बहुत कुछ कर सकते हैं। यही सोच कर आर्यसमाज ने महाशय धर्मपाल जी की प्रेरणा से ''सहयोग'' नामक योजना आरम्भ की।

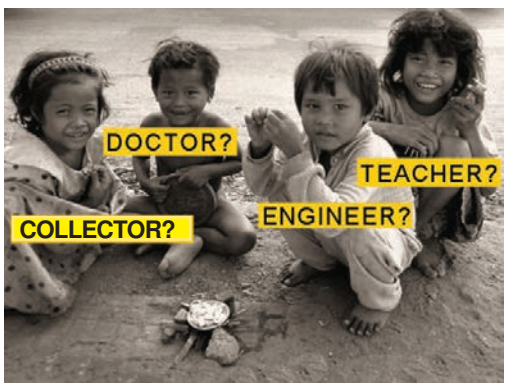

'अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ' की पहल ''सहयोग'' वस्त्रों की आधारभूत आवश्यकता की पूर्ति व शिक्षा के मूलभूत अधिकार के लक्ष्य की प्राप्ति हेतु प्रयासरत है । इस प्रयास व महत लक्ष्य की पूर्ति हेतु आपके संचालन में सामजिक सेवा में सेवारत आर्यसमाज के सदस्य व स्थानीय निवासी अपने परिवार के किसी भी सदस्य के वह वस्त्र जो उपयोगी हैं किन्तु किसी कारण से अब आपके उपयोग में नहीं आ रहे हैं तथा वह पुस्तकें जो पाठ्यक्रम में हैं पाठ्यक्रम (Course) पूरा कर लेने के पश्चात् अब अन्य किसी जरूरतमंद छात्र की शिक्षा में सहयोगी हो सकती हैं, को ''सहयोग'' के माध्यम से जरूरतमंद व्यक्ति तक पहुंचा सकते हैं।

आपके द्वारा संचालित आर्य समाज ऐसे वस्त्रों, जूतों, खिलोनों अथवा पुस्तकों को ''सहयोग'' की सहयोगी संस्था बनकर व "CLOTH BOX" स्थापित कर एकत्रित कर सकती है। पश्चात् ''सहयोग'' आपके सहयोग से एकत्रित वस्त्र, जूते, खिलोने, पुस्तकें एवं वे सभी अन्य वस्तुएं जो आपके लिए अनुपयोगी हैं किन्तु किसी दूसरे को सहयोग दे सकती हैं, को सहयोगी आर्य समाज व संस्थाओं से संकलित कर, छांटकर, पैककर देशभर के अनेक आदिवासी क्षेत्रों में आर्य समाज, संस्थाओं के माध्यम से जरुरतमंदों तक पहुंचाने का कार्य निष्पादित करेगी। ''**सहयोग**'' के विषय में किसी भी प्रकार की जानकारी प्राप्त करने के लिए **श्री रवि आर्य जी** से मोबाइल नं. **9540050322** पर संपर्क कर सकतें हैं। सभी आर्य समाजों के सहयोग से दिल्ली में इस कार्य को दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के माध्यम से संचालित किया जा रहा है।

निवेदक

धर्मपाल आर्य, प्रधान — **विनय आर्य**, महामन्त्री
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

महाशय धर्मपाल, प्रधान — **जोगेन्द्र खट्टर**, महामन्त्री
अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ

पुस्तक परिचय

महर्षि दयानन्द गन्थ परिचय

बहन कञ्चन आर्या द्वारा लिखित पुस्तक **महर्षि दयानन्द ग्रन्थ परिचय (प्रश्नोत्तरी)** बहुत ही सरल, स्पष्ट, संक्षिप्त एवं सारगर्भित है। बच्चों के लिए एवं आर्य साहित्य से नये परिचित लोगों के लिए तो यह पुस्तक बहुत ही उपयोगी है। इसमें महर्षि के ग्रन्थों के विषय-निर्देश के साथ-साथ ग्रन्थों की विशेषताओं को प्रश्नोत्तर रूप में दर्शाया गया है।

आप भी इस महत्त्वपूर्ण पुस्तक को अवश्य पढ़ें व अपने ईष्ट-मित्रों को पढ़ने के लिए दें। पुस्तक प्राप्त करने के लिए सम्पर्क करें:-

पुस्तक प्राप्ति के लिए सम्पर्क करें:-
वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001,
मो. नं. 9540040339

मैं आर्य समाजी कैसे बना?

आर्यसन्देश के समस्त पाठकों की सूचनार्थ है कि 'आर्य सन्देश' में एक नया स्तम्भ '**मैं आर्य समाजी कैसे बना**' पुनः आरम्भ कर दिया गया है। इस स्तम्भ में उन सभी महानुभावों का परिचय प्रकाशित किया जाएगा जो किसी की प्रेरणा/ विचारधारा से आर्य समाजी बनें हों। यदि आपके साथ भी कुछ ऐसा हुआ है तो आप भी अपना प्रेरक प्रसंग अपने फोटो के साथ हमें लिखें या aryasabha@yahoo.com पर ईमेल करें। हमारा पता है-

सम्पादक,
आर्य सन्देश साप्ताहिक,
15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001

आर्यजनों के लिए खुशखबरी
महर्षि दयानन्दकृत
सम्पूर्ण साहित्य
सत्यार्थ प्रकाश
(18 भाषा में)
अब सीडी में भी उपलब्ध
मूल्य मात्र 30/- रुपये

देश और समाज विभाजन के षड्यन्त्र का पर्दाफास

आओ! जानें मनुस्मृति का सच

स्वाध्याय के लिए प्रक्षेप रहित संस्करण

मनु के मौलिक आदेशों-उपदेशों का प्रसंगबद्ध वर्णन होने से स्वाध्यायशील महानुभावों के लिए परम उपयोगी।
मूल्य : ~~600~~/- 500/-
प्राप्त करने हेतु सम्पर्क करें
वैदिक प्रकाशन, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-1, मो. 9540040339

मातृशक्ति

दूध सेवन सम्बन्धी आवश्यक नियम

पिछले अंक में आपने बालकों के लिए सर्वश्रेष्ठ गाय के दूध के विषय में पढ़ा। दूध ा सेवन के लिए भी विद्वानों ने कुछ नियम बनाए हैं।

1. दूध पीने के लिये प्रातः, मध्यान्ह तथा रात्रि ये तीन समय ही उपयुक्त तथा लाभप्रद हैं। मध्यान्ह से पूर्व पिया हुआ दूध बलवर्धक, पुष्टिकारक और अग्निवर्धक होता है। मध्यान्ह काल में पिया हुआ दूध बलवर्धक तथा अग्निदीपक है। कफ तथा पित्त को नाश करता है। रात्रि का पिया हुआ दूध बालकों के शरीर की वृद्धि करता है। क्षय रोग का नाश करता है, वीर्यवर्धक है। अत्यन्त पथ्यकारी तथा अनेक दोषों को नष्ट करता है। आंखों के लिए भी हितकारी है।

2. जहां तक हो सके रात्रि को भोजन के एक-दो घण्टे पश्चात् दूध पीना चाहिए, भोजन के साथ नहीं।

3. जिस दूध का रंग बदल गया हो, जिसके स्वाद में फीकापन आ गया हो जो खट्टा हो गया हो जिसमें दुर्गन्ध आ गई हो, जो फट गया हो जिसमें भूल से लवण आदि पदार्थ पड़ गये हों उस दूध को कदापि नहीं पीना चााहिए। ऐसा दूध पीने से शरीर में नाना प्रकार के विकार उत्पन्न हो जाते हैं तथा बलबुद्धि का नाश होता है।

4. छोटे बच्चों को ऊपर के दूध में जहां तक हो सके बकरी अथवा गाय का दूध ही पिलाना चाहिए और उसमें थोड़ा जल तथा थोड़ी-सी बारीक पिसी सोंठ डालकर पांच-छह उबाले आ जाने पर उतार देना चाहिए। फिर थोड़ी-सी शक्कर डालकर पिला देना चाहिए।

5. देर के दूध को बिना औटाए नहीं पीना चाहिए।

6. जहां तक हो सके बच्चों को शीशी से दूध नहीं पिलाना चाहिए। यदि विवशतः पिलाना भी पड़े तो उसे प्रतिदिन गर्म जल से ब्रुश द्वारा साफ कर लेना चाहिए।

7. दूध औटाते समय यदि उसमें थोड़ी-सी पिसी हुई सोंठ डाल दी जाए तो बहुत अच्छा है। इससे दूध पाचक तथा शक्तिवर्धक बन जाता है।

8. रात्रि को दही नहीं खाना चाहिए। यदि खाना भी पड़े तो उसमें शक्कर, शहद या मूंग की दाल डालकर खाना चाहिए।

9. रक्तपित्त सम्बन्धी यदि कोई रोग हो तो दही नहीं खाना चाहिए।

10. अगहन, पौष, माघ और फाल्गुन में दही खाना अधिक लाभप्रद है।

11.सर्दी में मट्ठा पीना सब मौसमों से अधिक लाभप्रद है। इस मौसम में सेवन किया हुआ मट्ठा संग्रहणी, बवासीर, कफ तथा वात रोग और मन्दाग्नि के लिए अमृत तुल्य है।

- आचार्य भद्रसेन
साभारः आदर्श गृहस्थ जीवन

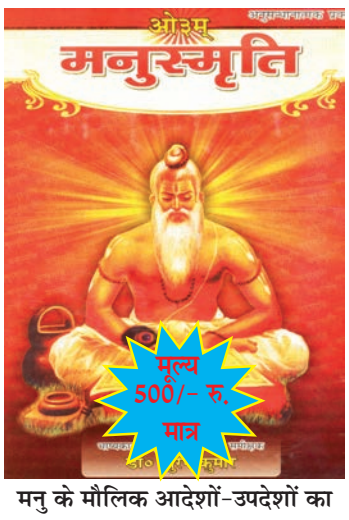

आदर्श गृहस्थ जीवन : वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। पुस्तक प्राप्त के लिए आज ही अपना आदेश प्रेषित करें या मो. नं. 9540040339 पर सम्पर्क करें।

दिल्ली सभा का व्हाट्एप्प : आओ जुड़ें - साझा करें विचार

व्हाट्सएप्प पर
आर्य समाज से जुड़ें
हमारा नंबर Save करें
9540045898
अपना नाम City और Yes लिख कर भेजें

नोट -हमारा नंबर Save करने के बाद ही आप Message रिसीव कर पाएगें |

Veda Prarthana - II
Regveda - 5

Dear God May We Always Use Virtuous Means to Earn wealth

- Acharya Gyaneshwarya

या मा लक्ष्मीः पतयालूरजुष्टा
अभिचस्कद वन्दनेव वृक्षम्।
अन्यत्रास्मात् सवितस्तामितो घाः
हिरण्य हस्तो बसुनो रसणः।।
अथर्ववेद 6/115/2

Ya ma lakshmi patyaloorajushta abhichaskad vandaneva vraksham. Anyatrasmat savitah tamito dhah hiranya hasto vasu no raranah.
(Atharva Veda 7:115:2)

In this mantra, God informs us what type of wealth is beneficial for us, and which type of wealth is harmful and will lead to our downfall. Wealth should always be earned by honest and virtuous means by following dharma principles that are fair and beneficial for everybody in the society. Money that is gathered/earned by dishonest means, cheating or deceiving others, bribes, exploiting or stealing from others in the long haul will always lead to our downfall. The reference here is not only to ill obtained money, but also to wealth which after meeting the needs of the earner, is hoarded and lies unused rather than being employed for the benefit of the community, society and the nation. Such hoarded money even when earned by fair means beyond a person's present and future needs becomes cause of major social inequality, unrest and other social ills. Of course, even worse is money, which has been earned by adharmic i.e. non-virtuous means such as deceptive schemes, cheating, bribes and then is secretly hidden e.g. Swiss bank accounts. Such ill-earned money in the long haul leads topersonal ruin in the form of lack of mental peace, fear, drug addiction etc. Also, such ill-earned money leads to social ruin in the form of lack of trust in governmental authorities by a large segments of the society as well as poverty, hunger etc for the poorest in the society who could have benefited from the wealth.

In most nations and large societies, one would find thousands and lacs (o.1 million) of persons who have worked very hard to earn a lot of money. However, most such persons due to greed or moh (blind attachment or infatuation) hoard and hide all of their wealth for their children's inheritance, rather than also use it for the welfare of others less fortunate in the society. Because their children inherit large amount of wealth without doing hard work, they become lazy, callous, indulgent, atheist, get into many vices such as gambling, deception etc. If their parents had taught them the value of money earned by hard work and not given them large amounts of free money, it is likely that the children would not have developed non-virtuous values and gotten involved in vices.

This Veda mantra states that money which is ill earned or hoarded and not utilized for the welfare of every body in the society, in the end by creating fears of its loss, destroys the hoarding person's peace and happiness. Such wealth is like a parasitic vine that clings and wraps around a host tree and sucks its sap, whereby the vine gradually weakens and kills the host tree. In addition, a person who clings to his/ her wealth without sharing is like a poisonous snake that blocks people's access to their homes; such a hoarder's money is of no use to him/her-self or to the society. Moreover, suh wealth is often lost by being stolen by thieves or by fraud perpetrated by other dishonest persons.

We pray to God in this mantra: Dear God, may we never earn or gain wealth that will lead to our downfall and if per chance we encounter such wealth, may we quickly get rid of it. Dear God, You are Supreme Bliss, please fill us up with such inspiration that we are always careful to earn and gain our money by honest means based on dharma (virtuous) principles so that the wealth gives us lasting internal joy and not mere things of creature comforts and transient happiness. may such virtuous wealth help promote our wisdom, spiritual strength and help us gain genuine positive fame in the world.

Dear God, give us so much wisdom, courage, strength and will power that we are never tempted by wealth that is ill earned by crooked means. May we never use the excuse that it is okay to cheat a little because others we know are cheating and thus have become wealthy. In addition, if due to negligence, laziness or callousness we acquire any ill wealth, then we would immediately get rid of it by returning it to the source or for the genuine benefit of others in the society/community. Dear God, by only earning or gaining virtuous wealth and staying away from any temptation or effort to gain ill money, with Your grace may we live a succesful life full of contentment, fearlessness, peace and joy.

To Be Continue....

आओ ! संस्कृत सीखें

खाद्य पदार्थानामनि (49)

गतांक से आगे....

Kova - गव्या
Kova cake - गव्यपिटकः
Agra halwa - आग्रारसवती
Kara boondi - क्षारबिन्दवः
Kara mixture - मिश्रितम्
Chakli - शकृकुली
Lunch - अहराशः
Dinner - नक्ताशः
Leaf plate - विस्तरी
Curry - व्यञ्नम्
Dal curry - शाकसूपः
Dal - सूपः
Stuffed curry - सोपस्करशाकः
Fried roti - अङ्गाररोटिका
Wheet roti - गोधूमरोटिका
Jowari roti - जूर्णरोटिका
Ragi grain - कोद्रवकबलम्
Ragi roti - कोद्रवरोटिका
Oiled roti - तैलरोटिका
Rice - अन्नम्
Mango rice - आम्रोदनम्
Chitranna - चित्रान्नम्
Pulihora - सरान्नाम्
Fried rice -भर्जितान्नम्
Seasoned cooked rice - उपस्कृतोदनम्
Lemon rice - जंबीरोदनम्
Fried curry - भर्जितशाकम्
Sambar - क्वथितम्
Rasam - सारः
Chutuney - उपसेचनम्
Pickle - उपदंशः
Ghee - घृतम्
Paayasa - पायसम्
Saabakkipaayasa - सागुपायसम्
Shaavigekheer - सूत्रिकापायसम्
Papad - पर्पटः
Moongpapad - मुद्गपर्पटः
Disignedpapad - परिकल्पवर्ध्यम्
Rice papad - सागुवर्ध्यम्
Vada - माषवटिका
Curd vada - दधिवटिका
Buttermilk - तक्रम्
Curd rice - दद्यन्नम्
Ice cream - पयोहिमम्
Lassi - स्वादुमथितम्

- क्रमशः -

आचार्य सन्दीप कुमार उपाध्याय
मो. 9899875130

प्रेरक प्रसंग

ठाकुर जी क्योंकर बोलें?

श्रद्धेय पण्डित रामचन्द्रजी देहलवी मूर्त्तिपूजा पर व्याख्यान देते हुए उपर्युक्त घटना के साथ यह भी सुनाया करते थे कि उपर्युक्त उत्तर पाकर पुजारीजी ने हँसकर कहा पण्डितजी और बात तो छोड़िए जन्माष्टमी आने वाली है तनिक लालाजी से कह दीजिए कि ठाकुरजी के कपड़े बनवा देवें। मैं कहता हूँ तो रुष्ट होने लगते हैं। पड़ोसी का इतना तो....।''

पण्डितजी ने लालाजी के घर के सामने से निकलते हुए कहा, ''आप अपने कपड़े बनवाते हुए कुछ ठाकुरजी का भी ध्यान रक्खा करें।''

लालाजी ने कहा, ''आपको पुजारी जी ने कहा होगा?'' पण्डितजी ने कहा कि 'हाँ' पुजारी ही कह सकते हैं, ठाकुरजी की क्या मजाल जो बोल सकें।

- प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु
साभार :
तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी

तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी : पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। पुस्तक प्राप्ति हेतु आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

आर्य विद्या परिषद् दिल्ली द्वारा
समस्त विद्यालयों/आर्य शिक्षण संस्थाओं हेतु प्रकाशित
नैतिक शिक्षा की पुस्तकें
नर्सरी से 12वीं कक्षा तक
आकर्षक छूट 25%

बेहतरीन कागज पर आकर्षक छपाई में तैयार कराई गई नैतिक शिक्षा की पुस्तकें छात्रों के नैतिक, बौद्धिक, आध्यात्मिक ज्ञान तथा राष्ट्रीय भावना जागृत करने वाली हैं। ये पुस्तकें दिल्ली के समस्त विद्यालयों/शिक्षण संस्थाओं के साथ-साथ दिल्ली से बाहर अन्य प्रदेशों के विद्यालयों के पाठ्यक्रम में भी नर्सरी से कक्षा 12वीं तक लागू हैं। अपने विद्यालय/शिक्षण संस्था के लिए आवश्यकतानुसार मंगवाने के लिए सभा कार्यालय से सम्पर्क करें।
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15, हनुमान रोड, नई दिल्ली- 110001
☎ : 23360150, 9540040339; Email : aryasabha@yahoo.com

पृष्ठ 4 का शेष

आदमी है। फिर सोचा कि पढ़ने से योग साधन कहीं अच्छा है। लेकिन अब इस निर्णय पर पहुंचा हूं कि राम नाम से ही सच्ची प्रीति की जाये तो ही उद्धार संभव है।

राम बुलावा भेजिया, दिया कबीरा रोय।
जो सुख साधु संग में, सो बैकुंठ न होय।।

अर्थ : कबीर कहते हैं कि जब मेरे को लाने के लिये राम ने बुलावा भेजा तो मुझसे रोते ही बना। क्योंकि जिस सुख की अनुभूति साधुओं के सत्संग में होती है वह बैकुंठ में नहीं।

वैध मुआ रोगी मुआ, मुआ सकल संसार।
एक कबीरा ना मुआ, जेहि के राम अधार।।

अर्थ : कबीर दास कहते हैं कि वैद्य, रोगी और संसार नाशवान होने के कारण ही उनका रूप-रूपांतर हो जाता है। लेकिन जो राम से आसक्त हैं वे सदा अमर रहते हैं। कबीर वाणी में आपको ऐसे अनेक उदाहरण मिलते हैं जिनमें संत कबीर श्री राम को आराध्य रूप में स्वीकार करते हैं। श्री राम के नाम से चिढ़ने वाले अम्बेडकरवादियों क्या तुम इस सत्य को जुठला सकते हो।

सन्त रविदास और श्री राम : चमार (चर्मकार) कुल में पैदा हुए संत रविदास श्री राम जी के सम्मान में भक्ति इस प्रकार से करते हैं-

हरि हरि हरि हरि हरि हरि हरि
हरि सिमरत जन गए निस्तरि तरे।१। रहाउ।।
हरि के नाम कबीर उजागर।।
जनम जनम के काटे कागर।।१।।
निमत नामदेउ दूधु पिआइआ।।
तउ जग जनम संकट नहीं
आइआ।।२।।
जन रविदास राम रंगि राता।।
इउ गुर परसादी नरक नहीं जाता।।३।।

- आसा बाणी स्त्री रविदास जिउ की, पृष्ठ487

सन्देश- इस चौपाई में संत रविदास जी कह रहे हैं कि जो राम के रंग में (भक्ति में) रंग जायेगा वह कभी नरक नहीं जायेगा।

जल की भीति पवन का थंभा रकत बुंद का गारा।
हाड मारा नाड़ी को पिंजरु पंखी बसै बिचारा।।१।।
प्रानी किआ मेरा किआ तेरा।।
जेसे तरवर पंखि बसेरा ।।१।। रहाउ।।
राखउ कंध उसारहु नीवां।।
साढे तीनि हाथ तेरी सीवां ।।२।।
बंके वाल पाग सिरि डेरी।।
इहु तनु होइगो भसम की ढेरी ।।३।।
ऊंचे मंदर सुंदर नारी।।
राम नाम बिनु बाजी हारी ।।४।।
मेरी जाति कमीनी पांति कमीनी ओछा जनमु हमारा।।
तुम सरनागति राजा राम चंद कहि रविदास चमारा।।५।।

- सोरठी बाणी रविदास जी की, पृष्ठ659

सन्देश- रविदास जी कह रहे हैं कि राम नाम बिना सब व्यर्थ है।

क्या अम्बेडकरवादी श्री राम को वाल्मीकि, कबीर और रविदास से अलग कर सकते हैं? नहीं। मध्य काल के दलित संत हिन्दू समाज में व्याप्त छुआछूत एवं धर्म के नाम पर अन्धविश्वास का कड़ा विरोध करते थे, मगर श्री राम को पूरा मान देते थे। उनका प्रयोजन केवल समाज सुधार था। आज कुछ अम्बेडकरवादी दलित साहित्य के नाम पर ऐसा कूड़ा परोस रहे हैं, जिसका उद्देश्य केवल हिन्दू समाज की सभी मान्यताओं जैसे वेद, गौ माता, तीर्थ, श्री राम, श्री कृष्ण आदि को गाली देना भर होता है। इस सुनियोजित षड़यंत्र का उद्देश्य समाज सुधार नहीं अपितु परस्पर वैमनस्य फैला कर आपसी मतभेद को बढ़ावा देना है। हम सभी देशवासियों का जिन्होंने भारत की पवित्र मिट्टी में जन्म लिया है, यह कर्त्तव्य बनता है कि इस जातिवाद रूपी बीमारी को जड़ से मिटाकर इस हिन्दू समाज की एकता को तोड़ने का सुनियोजित षड़यंत्र विफल कर दें। अम्बेडकरवाद तो केवल बहाना है असली उद्देश्य तो देश की एकता को तोड़ना है।

- शिशु रोग विशेषज्ञ

सुख समृद्धि हेतु यज्ञ कराएं

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की योजना 'घर-घर-यज्ञ, हर-घर-यज्ञ' राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली में उत्साह पूर्वक नित्य निरंतर प्रगति की ओर है। वैदिक वाङ्मय में यज्ञ की विशेष महत्ता का वर्णन मिलता है। यज्ञ के द्वारा संसार के सभी ऐश्वर्य मानव को प्राप्त होते हैं। यजुर्वेद में कहा गया है कि 'अयं यज्ञो भुवनस्य नाभि:' अर्थात् यह यज्ञ संसार का केन्द्र बिन्दु है, अर्थात् विश्व का आधार है। शतपथ ब्राह्मण में कथन है कि 'स्वर्ग कामो यजेत्' अर्थात् हे मनुष्य यदि तू संसार के सुख प्राप्त करना चाहता है तो यज्ञ कर। आप भी अपने घर-परिवार में यज्ञ कराने के लिए सम्पर्क करें। यदि परमात्मा की व्यवस्थानुसार आपका परिजन/परिचित मृत्यु को प्राप्त होता है, उसके अन्तिम संस्कार की व्यवस्था हेतु भी आप सम्पर्क कर सकते हैं।

- सत्यप्रकाश आर्य 9650183335

वैदिक शगुन लिफाफे

महर्षि दयानन्द के चित्र एवं वेदमन्त्रों सहित सुन्दर डिजाइनों में

सिक्के वाले	बिना सिक्के
मात्र 500/-रु. सैंकड़ा	मात्र 300/-रु. सैंकड़ा

चुनाव समाचार

आर्य समाज रायपुर दरवाजा बाहर, अहमदाबाद (गुजरात)

प्रधान -श्री कमलेश कुमार शास्त्री
मंत्री- श्रीमती शशीबहन कंसारा
कोषाध्यक्ष - श्री शशिकान्त भाई आर्य

आर्य समाज बड़ा बाजार कोलकाता (प. बंगाल)

प्रधान - श्री दीनदयाल गुप्ता
मंत्री - श्री अनन्द देव आर्य
कोषाध्यक्ष - श्री सज्जन बिन्दल

सार्वदेशिक आर्यवीर का राष्ट्रीय प्रशिक्षण शिविर

दिनांक : 4 से 17 जून 2018, स्थान गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ, फरीदाबाद

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा के सहयोग से सार्वदेशिक आर्यवीर दल के प्रधान संचालक स्वामी देवव्रत सरस्वती जी की अध्यक्षता में शाखा नायक, उपव्यायाम शिक्षक, व्यायाम शिक्षक श्रेणी का शारीरिक एवं बौद्धिक प्रशिक्षण सुयोग्य शिक्षकों द्वारा दिया जायेगा। प्रवेशार्थी आर्यवीर दल या आर्य समाज के अधिकारी का संस्तुति पत्र एवं पहले उत्तीर्ण परीक्षा के प्रमाण पत्र की प्रतिलिपि साथ लेकर आयें। शिविर के अनुशासन का पूर्णत: पालन करना होगा। अनुशासन भंग करने पर शिविरार्थी को शिविर से पृथक् किया जा सकता है। **प्रवेश शुल्क 500/-रुपये** (पाठ्य पुस्तकें शिविर की ओर से दी जायेंगी।) **नोट 1.** शिविर में प्रवेश आर्यवीर श्रेणी उत्तीर्ण का ही दिया जायेगा। शिविरार्थी की योग्यता मैट्रिक उत्तीर्ण होनी चाहिये। शिविर में प्रथम श्रेणी को प्रवेश नहीं मिलेगा। **2.** शिविर में संध्या-यज्ञ एवं प्राथमिक चिकित्सा तथा व्यक्तित्व विकास का क्रियात्मक प्रशिक्षण दिया जायेगा। विस्तृत जानकारी के लिए सम्पर्क करें- **ऋषिपाल आचार्य, संयोजक, मो. 09811687124**

आर्य समाज राज नगर-2 पालम कॉलोनी में

नव संवत्सर उत्सव

आर्य समाज राज नगर-2 पालम कॉलोनी के तत्त्वावधान में 21 व 22 अप्रैल 2018 को नव संवत्सर उत्सव का आयोजन किया जा रहा है। कार्यक्रम के अन्तर्गत आचार्य वीरन्द्र आर्य (सहारनपुर) एवं आचार्य ईश्वर चन्द्र गौतम प्रवचन और पं. योगेश दत्त आर्य, (बिजनौर) भजन प्रस्तुत करेंगे। *- रतन आर्य, मंत्री*

आर्यसमाज यमुना विहार दिल्ली का

37वां वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्यसमाज यमुना विहार का 37वां वार्षिकोत्सव समारोह 11 से 15 अप्रैल, 2018 तक आयोजित किया गा। इस अवसर पर सामवेदीय यज्ञ आचार्य सोमदेव शास्त्री जी के ब्रह्मत्व में सम्पन्न हुआ। भजनोपदेश आचार्य देव आर्य जी के हुए। 14 अप्रैल को आर्य महिला सम्मेलन एवं 15 अप्रैल को समापन समारोह सम्पन्न हुआ। *- विश्वास वर्मा, मन्त्री*

योग-ध्यान-साधना शिविर सम्पन्न

जम्मू काश्मीर की सुरम्य एवं मनोरम पहाड़ियों में स्थित आनन्दधाम आश्रम (उधमपुर,जम्मू) में आश्रम के मुख्य संरक्षक एवं निदेशक महात्मा चैतन्यस्वामी जी की अध्यक्षता एवं पूज्य मां सत्यप्रिया यतिजी के सान्निध्य में 8 से 15 अप्रैल 2018 तक नि:शुल्क योग-ध्यान-साधना शिविर का आयोजन किया गया। शिविर में राजस्थान, हिमाचल,पंजाब,जम्मू काश्मीर, हरियाणा, उ.प्रदेश, छत्तीसगढ़, गुजरात, दिल्ली, म.प्र.,उत्तराखंड तथा उड़िसा आदि राज्यों से आए हुए लगभग एक सौ शिविरार्थियों ने भाग लिया। शिविर में अनुभवी आचार्यों एवं महात्माओं द्वारा उपासना, प्राणायाम, योगासन आदि का क्रियात्मक अभ्यास कराया गया। वैदिक प्रवक्ता श्री अखिलेश भारतीयजी के उपनिषद् एवं सन्ध्या पर हुए प्रवचन अत्यन्त प्रभावशाली रहे। इस अवसर पर पूज्य महात्मा जी के ब्रम्हत्व में सामवेद परायाण यज्ञ भी सम्पन्न हुआ। सेवानिवृत्त, मुख्य सचिव श्री कुण्डल,जम्मू काशमीर विधान सभा के अध्यक्ष श्री कवीन्द्र जी तथा स्थानीय विधायक श्री पवन आदि की गरिमामयी उपस्थिति भी रही।

- भारतभूषण आनन्द, प्रधान

आर्यसमाज खेड़ा अफ़गान का

120वां वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्यसमाज खेड़ाअफगान, सहारनपुर का 120वें वार्षिकोत्सव पर व्यक्ति विकास शिविर में अजमेर से पधारे आचार्य कर्मवीर जी ने जिज्ञासुओं की शंकाओं का समाधान करते हुए अनेक विषयों पर प्रकाश डाला। समारोह में पधारे श्री राणवीर शास्त्री ने भी वेद पर अपने विचार प्रकट किये। कार्यक्रम का संचालन श्री वेद भूषण व श्री अमित कुमार ने किया।

- राजेश कुमार आर्य, मंत्री

ऋग्वेद पारायण यज्ञ सम्पन्न

आर्यसमाज मंदिर पटियाला में सात दिवसीय ऋग्वेद पारायण महायज्ञ का आयोजन किया गया। मुख्य अतिथि श्री विनोद भारद्वाज मंत्री आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब थे। यज्ञ ब्रह्मा आचार्य हरिशंकर अग्निहोत्री ने कहा कि वेद का गहन स्वाध्याय व अध्ययन न करने वालों को अनेक प्रकार की भ्रान्तियां हैं। यदि वह इनका अध्ययन करें तो उनकी सभी शंकाओं व भ्रान्तियों का निवारण हो सकता है। आर्यसमाज के प्रधान श्री राज कुमार सिंगला ने अतिथियों का शाल भेंटकर सम्मान किया। श्री दिनेश पथिक के सुमधुर भजन हुए।

- बिजेन्दर शास्त्री, संयोजक

शोक समचार

श्री आजाद सिंह को पत्नी शोक

आर्यसमाज दरियापुर, दिल्ली-39 के प्रधान श्री आजाद सिंह जी की धर्मपत्नी श्रीमती राजबाज देवी जी का 58 वर्ष की आयु में दिनांक 5 अप्रैल, 2018 को निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से किया गया। उनकी स्मृति में यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा 15 अप्रैल, 2018 को प्रात:काल सम्पन्न हुई जिसमें निकटवर्ती अनेक आर्यसमाजों के पदाधिकारियों ने पहुंचकर अपने श्रद्धासुमन अर्पित किए।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे दिवंगत आत्माओं को सद्गति एवं शोक-संतप्त परिजनों को इस दारुण दु:ख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करे। -सम्पादक

साप्ताहिक आर्य सन्देश

सोमवार 16 अप्रैल, 2018 से रविवार 22 अप्रैल, 2018

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान् रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2018-19-2020

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 19/20 अप्रैल, 2018

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं. यू. (सी.) 139/2018-19-2020

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 18 अप्रैल, 2018

इस वर्ष भारत की राजधानी नई दिल्ली में होगा

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन - 2018 दिल्ली

25-26-27-28 अक्तूबर, 2018

समस्त आर्य प्रतिनिधि सभाओं, आर्यसमाजों, आर्य शिक्षण संस्थानों - विद्यालयों, गुरुकुलों, डी.ए.वी. स्कूलों एवं सहयोगी संस्थानों से निवेदन है कि महासम्मेलन की उपरोक्त तिथियों को नोट करें तथा इन तिथियों में आपना कोई भी आयोजन न रखें और दल-बल सहित अधिकाधिक संख्या में महासम्मेलन में पहुंचकर संगठन शक्ति का परिचय दें तथा इस सूचना को विभिन्न माध्यम से प्रचारित करें।

निवेदक

सुरेशचन्द्र आर्य, प्रधान
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

धर्मपाल आर्य, प्रधान
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

प्रतिष्ठा में,

तेजी से बढ़ रहे हैं आर्यसमाज YouTube चैनल के दर्शक

65 लाख से ज्यादा लोगों ने देखा अब तक

आप भी देखें और सब्सक्राइब अवश्य करें और अपने मित्रों, सम्बन्धियों को देखने की प्रेरणा करें।

यदि आप लगातार नई वीडियो देखना/सूचना प्राप्त करना चाहते हैं तो घंटी बटन दबाकर सब्सक्राइब करें।

यदि आप भी अपने आर्यसमाज के आयोजनों - भजन, प्रवचन, सन्देशात्मक कार्यक्रम, सांस्कृतिक प्रस्तुतियों को इस चैनल पर अपलोड कराने के लिए upload@thearyasamaj.org पर भेजें। - महामन्त्री

आर्यजगत् का सुप्रसिद्ध चलचित्र

सत्य की राह Vedic Path to Absolute Truth

मात्र 30/- रु. हिन्दी एवं अंग्रेजी दोनों भाषाओं में उपलब्ध

प्राप्ति स्थान : वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, मो. नं. 9540040339

जुड़िए आर्यसमाज के फेसबुक से जोड़िए अपने मित्रों को और दीजिए सन्देश आर्यसमाज का

Arya Sandesh
www.facebook.com/samajaryasandesh

फेसबुक : आर्यसन्देश साप्ताहिक

Arya Samaj Facebook
www.facebook.com/arya.samaj

फेसबुक : आर्यसमाज

Vedic Prakashan
www.facebook.com/vedicparkashan

फेसबुक : वैदिक प्रकाशन

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा हरिहर प्रैस, ए-29/2, नरायणा औद्यो. क्षेत्र-1, नई दिल्ली-28 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित

सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह